Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

डॉ. लोकेश कुमार शर्मा *

* एसोसिएट प्रोफेसर, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

शोध सारांश – महात्मा गांधी का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है। गांधीजी ने अहिंसा, सत्याग्रह, और असहयोग जैसे सिद्धांतों के माध्यम से भारतीय जनता को संगठित किया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनका जीवन और उनके विचार स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक महान प्रेरणा बने और उनके नेतृत्व में भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की। इस शोधपत्र में महात्मा गांधी के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दिए गए योगदान का विश्लेषण किया गया है।

महात्मा गांधी का प्रारंभिक जीवन और उनके विचारों का विकास

प्रारंभिक जीवन – मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर, गुजरात में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर के दीवान थे और उनकी माता पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। बचपन से ही गांधीजी पर माता के धार्मिक और नैतिक मूल्यों का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर और राजकोट में प्राप्त की और बाद में कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए।

विदेश में शिक्षा और विचारों का विकास – गांधीजी ने 1888 में इंग्लैंड के इनर टेम्पल से कानून की डिग्री प्राप्त की। वहां रहने के दौरान उन्होंने पश्चिमी सभ्यता, न्याय प्रणाली, और सामाजिक आंदोलनों का गहन अध्ययन किया। इंग्लैंड में रहते हुए वे थियोसोफी, बाइबल, और भगवद गीता से प्रभावित हुए, जिसने उनके जीवन और विचारों को एक नई दिशा दी।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का संघर्ष

दक्षिण अफ्रीका में प्रवास – गांधीजी ने 1893 में एक कानूनी मामले के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की। वहां उन्होंने भारतीयों के साथ हो रहे नस्लीय भेदभाव को देखा और इसके खिलाफ आवाज उठाई। दक्षिण अफ्रीका में बिताए गए 21 वर्षों में गांधीजी ने सत्याग्रह के सिद्धांत को विकसित किया, जो उनके भविष्य के आंदोलनों का मूल आधार बना।

सत्याग्रह का उदय – गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया। 1906 में उन्होंने ट्रांसवाल सरकार के द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नए कानून के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन ने गांधीजी को एक सशक्त नेता के रूप में स्थापित किया। इस आंदोलन के सफल होने के बाद गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह को अपनी लड़ाई का मुख्य हथियार बना लिया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीजी का प्रवेश

भारत लौटने के बाद की स्थिति – 1915 में गांधीजी भारत लौटे और उन्होंने भारतीय समाज और राजनीति की स्थिति का गहराई से अध्ययन किया। उन्होंने महसूस किया कि भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक व्यापक और संगठित आंदोलन की आवश्यकता है। उनके विचारों का विकास भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के साथ-साथ यहां के लोगों की समस्याओं के आधार पर हुआ।

चंपारण सत्याग्रह – गांधीजी ने अपने पहले सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत 1917 में बिहार के चंपारण जिले से की, जहां किसान नील की खेती करने के लिए मजबूर थे। किसानों की समस्याओं को सुनने और उनके साथ खड़े होने के लिए गांधीजी ने चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व किया। यह आंदोलन गांधीजी के लिए एक बड़ी सफलता साबित हुआ और इससे उन्हें पूरे भारत में एक प्रभावशाली नेता के रूप में पहचान मिली।

असहयोग आंदोलन

जलियांवाला बाग हत्याकांड और असहयोग आंदोलन – 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड ने गांधीजी को गहराई से प्रभावित किया और उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने भारतीय जनता से ब्रिटिश सरकार के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग न करने का आह्वान किया। इस आंदोलन के तहत लोगों से सरकारी नौकरी, शिक्षा और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने का आह्वान किया गया।

असहयोग आंदोलन की सफलता और समाप्ति – असहयोग आंदोलन को पूरे देश में व्यापक समर्थन मिला। गांधीजी ने इसे अहिंसात्मक रूप से चलाने की अपील की, लेकिन 1922 में चौरी-चौरा कांड के बाद जब आंदोलन हिंसात्मक हो गया, तो उन्होंने इसे वापस ले लिया। हालांकि, इस आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और गांधीजी को राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन और दांडी यात्रा

नमक सत्याग्रह का प्रारंभ – 1930 में गांधीजी ने नमक कानून के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से दांडी तक 240 मील की यात्रा शुरू की, जिसे दांडी यात्रा के नाम से जाना जाता है। इस यात्रा के दौरान गांधीजी ने नमक कानून का उल्लंघन किया और समुद्र तट पर नमक बनाकर ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रभाव – नमक सत्याग्रह ने पूरे देश में

ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष की लहर पैदा कर दी। लाखों लोगों ने गांधीजी के आह्वान पर आंदोलन में भाग लिया और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सविनय अवज्ञा की। इस आंदोलन ने न केवल भारतीय जनता को संगठित किया बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को समर्थन मिला।

गांधीजी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

कांग्रेस के साथ जुड़ाव – गांधीजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होकर इसके प्रमुख नेता बने। उन्होंने कांग्रेस के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को संगठित और दिशा प्रदान की। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने स्वतंत्रता संग्राम को जन आंदोलन का रूप दिया और देश के हर कोने में आजादी की मांग को बुलंद किया।

हरिजन आंदोलन और सामाजिक सुधार– गांधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ सामाजिक सुधारों पर भी ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने अस्पृश्यता के खिलाफ हरिजन आंदोलन शुरू किया और दलितों को समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। गांधीजी का मानना था कि समाज के सभी वर्गों के बिना स्वतंत्रता अधूरी है, इसलिए उन्होंने सामाजिक सुधारों को स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनाया।

भारत छोड़ो आंदोलन

द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो आंदोलन – द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने बिना भारतीय नेताओं की सहमति के भारत को युद्ध में शामिल कर लिया। इससे नाराज होकर गांधीजी ने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने अंग्रेजों से तत्काल भारत छोड़ने की मांग की और 'करो या मरो' का नारा दिया।

भारत छोड़ो आंदोलन की सफलता – भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को हिला कर रख दिया। गांधीजी और अन्य कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन इसके बावजूद आंदोलन पूरे देश में फैल गया। जनता ने बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किए और ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को यह एहसास कराया कि भारत में अब उनके लिए शासन करना संभव नहीं है और उन्हें जल्द ही भारत छोड़ना होगा।

गांधीजी के सिद्धांत और उनके प्रभाव

अहिंसा और सत्याग्रह – गांधीजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनका अहिंसा और सत्याग्रह का सिद्धांत है। उन्होंने अहिंसा को एक सशक्त हथियार के रूप में प्रयोग किया और इसके माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह और इसे गांधीजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मूलमंत्र बनाया।

स्वदेशी आंदोलन – गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की और भारतीयों से विदेशी वस्त्रों और उत्पादों का बहिष्कार करने का आह्वान किया। उन्होंने चरखा और खादी को स्वदेशी आंदोलन का प्रतीक बनाया और भारतीय जनता को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। स्वदेशी आंदोलन ने न केवल आर्थिक स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया बल्कि भारतीय राष्ट्रीयता को भी मजबूत किया।

विभाजन और गांधीजी की भूमिका

विभाजन की त्रासदी – 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली, लेकिन इसके साथ ही देश का विभाजन भी हुआ। गांधीजी विभाजन के खिलाफ थे और उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए कई प्रयास किए, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हो पाए। विभाजन के दौरान हुई हिंसा और साम्प्रदायिकता ने गांधीजी को गहरा आघात पहुंचाया।

अंतिम संघर्ष और शहादत – विभाजन के बाद गांधीजी ने सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में दौरा किया और शांति स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने दिल्ली में उपवास रखा और हिंदू-मुस्लिम एकता की अपील की। गांधीजी का मानना था कि भारत की स्वतंत्रता तभी पूर्ण हो सकती है जब सभी धर्मों और समुदायों के लोग एक साथ मिलकर शांति और भाईचारे के साथ रहें। उनके उपवास और प्रयासों ने कई जगहों पर सांप्रदायिकता को कम किया, लेकिन विभाजन के घाव इतने गहरे थे कि वे पूरी तरह से शांति स्थापित करने में सफल नहीं हो सके।

30 जनवरी 1948 को, नई दिल्ली में बिड़ला भवन में प्रार्थना सभा के दौरान, नाथूराम गोडसे ने गांधीजी की गोली मारकर हत्या कर दी। गांधीजी के निधन ने पूरे देश को शोक में डूबा दिया, और यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक काले अध्याय के रूप में दर्ज हुई।

गांधीजी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान – महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपने सिद्धांतों और विचारों के माध्यम से भारतीय जनता को एकजुट किया और एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन खड़ा किया। गांधीजी ने अहिंसा, सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा जैसे सिद्धांतों के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया और देश को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर किया। उनका योगदान केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्तर पर भी महत्वपूर्ण रहा है।

भारतीय राजनीति में नैतिकता की स्थापना– गांधीजी ने भारतीय राजनीति में नैतिकता और आदर्शों की स्थापना की। उन्होंने अपने सिद्धांतों के साथ राजनीति को जोड़ा और इस बात पर जोर दिया कि साधन और उद्देश्य दोनों ही पवित्र और नैतिक होने चाहिए। उन्होंने भ्रष्टाचार, असत्य, और हिंसा के खिलाफ एक नैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जो आज भी भारतीय राजनीति के लिए एक प्रेरणा स्रोत है।

सामाजिक सुधारों में योगदान – गांधीजी ने भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे अस्पृश्यता, जातिवाद, और सामाजिक असमानता के खिलाफ भी संघर्ष किया। उन्होंने हरिजन आंदोलन के माध्यम से दलितों को समाज में समान अधिकार दिलाने की कोशिश की और उनके सामाजिक उत्थान के लिए अनेक प्रयास किए। गांधीजी का मानना था कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भी होनी चाहिए।

आर्थिक स्वराज की अवधारणा – गांधीजी ने आर्थिक स्वराज की अवधारणा को भी महत्व दिया। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से भारतीयों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी और विदेशी वस्त्रों और उत्पादों का बहिष्कार करने का आह्वान किया। उनके इस आंदोलन ने न केवल ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को कमजोर किया बल्कि भारतीय उद्योगों और कारीगरों को भी सशक्त बनाया।

शिक्षा और नैतिकता – गांधीजी ने शिक्षा को भी नैतिकता और जीवन मूल्यों के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें शिक्षा के साथ-साथ नैतिकता, श्रम और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया गया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और नैतिक व्यक्ति का निर्माण करना है।

गांधीजी की विरासत और आधुनिक भारत पर प्रभाव– महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान उनके विचारों और सिद्धांतों के माध्यम से आज भी जीवित है। उनकी विरासत ने न केवल भारतीय समाज को प्रभावित किया बल्कि वैश्विक स्तर पर भी उनके विचारों का प्रभाव पड़ा। अहिंसा और सत्याग्रह के उनके सिद्धांत ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला, और आंग सान सू की जैसे विश्व के कई नेताओं को प्रेरित किया।

भारतीय संविधान और गांधीजी के विचार–भारतीय संविधान में भी गांधीजी के विचारों का प्रभाव देखा जा सकता है। संविधान के प्रस्तावना में उल्लिखित न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व के सिद्धांत गांधीजी के विचारों का ही प्रतिफलन हैं। इसके अलावा, संविधान में पंचायत राज, स्वदेशी और ग्राम स्वराज जैसे सिद्धांत भी गांधीजी के विचारों से प्रेरित हैं।

समकालीन भारत में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता – समकालीन भारत में भी गांधीजी के विचार और सिद्धांत प्रासंगिक हैं। भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता और सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष में गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। अहिंसा, सत्य, और सामाजिक न्याय की उनकी अवधारणाएं आज के समाज में भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितनी स्वतंत्रता संग्राम के समय थीं।

वैश्विक स्तर पर गांधीजी का प्रभाव – गांधीजी के विचार और सिद्धांत वैश्विक स्तर पर भी अपनाए गए हैं। उनकी अहिंसा की नीति ने कई देशों में स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया और उनके सत्याग्रह के सिद्धांत ने दुनिया भर में न्याय और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले आंदोलनों को एक नई दिशा दी। गांधीजी का जीवन और उनके विचार आज भी विश्वभर में शांति, प्रेम और मानवता के प्रतीक माने जाते हैं।

निष्कर्ष – महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अतुलनीय और प्रेरणादायक है। उनके द्वारा स्थापित सिद्धांत और विचार न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को दिशा देने में सहायक रहे, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज और राजनीति में नैतिकता और आदर्शों की नींव भी रखी। गांधीजी का जीवन, उनके सिद्धांत और उनके विचार आज भी न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका और योगदान हमेशा भारतीय इतिहास में एक विशेष स्थान रखेंगे और उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Gandhi, M. K. (1927). An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth- Navjivan Publishing House.
2. Nanda, B. R. (1996). Mahatma Gandhi: A Biography. Oxford University Press.
3. Chandra, Bipan (1989). Indias Struggle for Independence. Penguin Books.
4. Brown, Judith M. (1972). Gandhis Rise to Power: Indian Politics 1915-1922- Cambridge University Press.
5. Parel, Anthony J. (2006). Gandhis Philosophy and the Quest for Harmony- Cambridge University Press.
6. Tendulkar, D. G. (1951). Mahatma: Life of Mohandas Karamchand Gandhi (Vols- 1-8). Ministry of Information and Broadcasting] Government of India.
7. Prasad, Rajendra (1946). India Divided. Hind Kitabs.
8. Fischer, Louis (1950). The Life of Mahatma Gandhi. Harper & Brothers.
9. Parekh, Bhikhu (2001). Gandhi: A Very Short Introduction. Oxford University Press.
10. Sarkar, Sumit (1983). Modern India 1885–1947. Macmillan.

****